>

Title: Shortage of fertilizers in the Country.

श्री गणेश सिंह (सतना): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार का देश में उर्वरक की लगातार हो रही कमी के बारे में ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूं। आज से 2-3 वर्ष पहले तक हमारे देश में उर्वरक की कोई कमी नहीं होती थी और देश में जो उर्वरक की पैदावार करने वाले कारखाने थे, वे पूरी तरह से इसकी आपूर्ति करने में सक्षम थे। अचानक केन्द्र सरकार की एक गलत नीति के चलते उर्वरक के सारे कारखाने बन्द हो गये और मजबूर होकर देश को विदेशों से उर्वरक आयात करना पड़ रहा है। एक नई बात अचानक सामने आई है कि पहले तो केन्द्र सरकार स्वयं उर्वरक का आयात करती थी, लेकिन अब यह जिम्मेदारी राज्य सरकारों के ऊपर छोड़ दी गई। मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों हो रहा है। अपनी जिम्मेदारी जो केन्द्र सरकार की थी, वह राज्य सरकारों के ऊपर डाल दी गई और आज यह स्थिति हो रही है कि किसानों को उर्वरक की जरूरत के समय पर वह किसानों को उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। एक तो वैसे भी किसान गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, कभी बाढ़, कभी अकाल, कभी ओले से तो कभी पाले से और वर्तमान में तो यह स्थिति हो चुकी है कि जो हमारा उत्पादन है, वह बहुत धीमी गति से घटता चला जा रहा है। खाद्यान की कमी से मजबूर होकर केन्द्र सरकार अभी फिर पांच लाख टन से ज्यादा गेहूं विदेशों से आयात कर रही है। इतनी ऊंची दर पर गेहूं यहां बाहर से आयात हो रहा है, जबकि हमारे देश के किसान कम दाम पर अपना उत्पादन बढ़ा सकते हैं। उनको प्रोत्साहित करने के लिए सब्सिडी देने का काम भी नहीं हो रहा है।

मैं केन्द्र सरकार से जानना चाहूंगा कि इस तरह की गलत नीति के चलते जो किसानों की आर्थिक हालत दिनों-दिन खराब होती जा रही है, इससे ये देश को कहां ले जाने का काम कर रहे हैं। हमारा देश खाद्य के मामले में आत्मनिर्भर था, लेकिन आज हमारी वह आत्मनिर्भरता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। आज हमारे यहां बीज भी विदेशों से आ रहा है, हमारा खाने का अनाज भी विदेशों से आ रहा है तो इस देश की आगे आने वाले समय में क्या स्थिति होने वाली है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इसलिए आत्मनिर्भरता हमारी जिस कृषि के क्षेत्र में थी, उसको और आत्मनिर्भर बनाने के लिए केन्द्र सरकार को नई योजना बनानी चाहिए और किसानों को सीधा लाभ पहुंचाने का काम करना चाहिए।[R67]